पाठ ८ रैदास के पद

पाठ का सारांश

संत रविदास के इन पदों में भक्त और भगवान के अटूट संबंध तथा सच्ची भक्ति का सुंदर वर्णन किया गया है।

पहले पद में कवि बताते हैं कि उन्हें भगवान (राम) का नाम जपने की ऐसी आदत लग गई है कि अब उसे छोड़ना संभव नहीं है। वे चंदन–पानी, दीपक–बाती, मोती–धागा जैसे उदाहरणों के माध्यम से समझाते हैं कि भक्त और भगवान का संबंध बहुत गहरा और अविभाज्य होता है।

दूसरे पद में कवि अपनी अटूट श्रद्धा और विश्वास व्यक्त करते हैं। वे कहते हैं कि अगर भगवान उन्हें छोड़ भी दें, तो भी वे भगवान को कभी नहीं छोड़ेंगे। वे तीर्थ और व्रत जैसे बाहरी कर्मकांडों को महत्व नहीं देते, बल्कि भगवान के चरणों में सच्ची भक्ति को ही सबसे बड़ा सहारा मानते हैं।

संदेश: संत रविदास के इन पदों से हमें यह महत्वपूर्ण संदेश मिलता है—

- सच्ची भक्ति मन से होती है, न कि दिखावे या कर्मकांड से।
- भक्त और भगवान का संबंध अटूट और गहरा होता है, जिसे कोई भी परिस्थिति नहीं तोड़ सकती।
- हमें भगवान के प्रति पूरी श्रद्धा, विश्वास और समर्पण रखना चाहिए।
- तीर्थ, व्रत और बाहरी आडंबर से अधिक आंतरिक भक्ति (मन की शुद्धता) महत्वपूर्ण है।
- भगवान हर जगह मौजूद हैं, इसलिए हमें हर समय उन्हें याद रखना चाहिए।

शब्दार्थ:

- चंदन – सुगंधित लकड़ी जिससे लेप बनाया जाता है
- बास – सुगंध / खुशबू
- घन – बादल
- मोरा – मोर
- चितवत / चितवन – देखने का तरीका / नजर
- चकोरा – पक्षी जो चाँद को देखना पसंद करता है
- दीपक – दिया (lamp)
- बाती – दीये में जलने वाली सूती बत्ती
- मोती – कीमती सफेद रत्न
- धागा – सूत / thread
- स्वामी – मालिक / भगवान
- दासा – सेवक / भक्त
- तीरथ (तीर्थ) – पवित्र धार्मिक स्थान
- बरत (व्रत) – उपवास / धार्मिक नियम
- अंदेशा – चिंता / डर
- चरन कमल – भगवान के चरण (सम्मानपूर्वक)
- भरोसा – विश्वास
- जोरौ (जोड़ना) – संबंध जोड़ना
- तोरौ (तोड़ना) – संबंध तोड़ना
- जोति/ज्योति – प्रकाश, रोशनी, चंद्रमा, नक्षत्र

अभ्यास

रचना से संवाद

मेरे उत्तर मेरे तर्क

निम्नलिखित प्रश्नों के सटीक उत्तर चुनिए और यह भी बताइए कि आपको ये उत्तर उपयुक्त क्यों लगते हैं?

1. "अब कैसे छूटै राम रट लागी" पंक्ति का भाव है?

   (क) नाम उच्चारण की कठिनाई (ख) नाम रटकर याद करना

   (ग) आराध्य का नाम जपना (घ) मित्रों का नाम रटना

   उत्तर: (ग) आराध्य का नाम जपना

   तर्क: इस पंक्ति में कवि यह कहना चाहते हैं कि उनके मन में राम के नाम की लगन लग गई है, जो अब निरंतर जाप में बदल चुकी है।

2. "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी" पंक्ति में आराध्य और भक्त का संबंध किस रूप में व्यक्त हुआ है?

   (क) एकाकार और समरूप (ख) तरल और तीव्र सुगंध

   (ग) आश्रय और आश्रित (घ) द्रव और ठोस

   उत्तर: (क) एकाकार और समरूप

   तर्क: जैसे पानी में चंदन घिसने पर वे मिलकर एक हो जाते हैं और पानी में चंदन की महक समा जाती है, वैसे ही भक्त का अस्तित्व ईश्वर में विलीन हो गया है।

3. "तुम दीपक, हम बाती" से रैदास का क्या भाव है?

   (क) दीपक और बाती का कोई मेल नहीं होता है।

   (ख) दीपक बिना बाती भी जल सकता है।

   (ग) भक्त आराध्य से अधिक महत्वपूर्ण है।

   (घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।

   उत्तर: (घ) भक्त का आराध्य से मेल जीवन को आलोकित करता है।

   तर्क: जैसे दीपक और बाती मिलकर प्रकाश फैलाते हैं, वैसे ही ईश्वर के सान्निध्य में भक्त का जीवन ज्ञान के प्रकाश से भर जाता है।

4. "जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ" पंक्ति में रैदास का क्या आशय है?

   (क) परोपकारी भक्ति भाव (ख) आराध्य से अटूट संबंध

   (ग) सांसारिक मोह (घ) कर्मकांड पर बल

   उत्तर: (ख) आराध्य से अटूट संबंध

   तर्क: कवि स्पष्ट कर रहे हैं कि भले ही संसार या परिस्थितियाँ बाधा डालें, पर प्रभु से उनका नाता अटूट है और वे उसे कभी नहीं तोड़ेंगे।

5. "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा" पंक्ति से आप क्या समझते हैं?

   (क) तीर्थ और व्रत आवश्यक नहीं हैं।

   (ख) तीर्थ और व्रत सब आवश्यक हैं।

   (ग) तीर्थ जाने से मुक्ति निश्चित है।

   (घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।

   उत्तर: (घ) आराध्य के चरणों में सच्चा आश्रय है।

   तर्क: रैदास बाहरी कर्मकांडों (तीर्थ-व्रत) पर संदेह व्यक्त करते हुए ईश्वर के चरणों की भक्ति को ही वास्तविक और सुरक्षित स्थान मानते हैं।

6. सर्वव्यापक ईश्वर की अवधारणा किस पंक्ति में व्यक्त होती है?

   (क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा"

   (ख) "जाकी जोति बरै दिन राती"

   (ग) "तुम दीपक, हम बाती"

   (घ) "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा"

   उत्तर: (क) "जहँ जहँ जाओ तुम्हरी पूजा"

   तर्क: इस पंक्ति का अर्थ है कि भक्त जहाँ भी जाता है, उसे ईश्वर का ही आभास होता है और वह वहीं उनकी पूजा करता है। यह ईश्वर की सर्वव्यापकता को दर्शाता है।

अर्थ और भाव

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ समझाते हुए भाव स्पष्ट कीजिए।

(क) "प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"

उत्तर: रैदास कहते हैं कि हे प्रभु! आप आकाश में छाए हुए काले बादलों के समान हैं और मैं वन में नाचने वाला मोर हूँ, जो बादलों को देखकर हर्षित होता है। साथ ही, जैसे चकोर पक्षी बिना पलक झपकाए चंद्रमा को निहारता रहता है, मेरा मन भी आपके दर्शनों के लिए वैसे ही लालायित रहता है।

(ख) "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"

उत्तर: कवि का मानना है कि उन्हें तीर्थ यात्राओं या कठिन व्रतों की कोई आवश्यकता या संशय नहीं है। उन्हें केवल अपने आराध्य के 'चरण-कमलों' (ईश्वर की शरण) पर ही अटूट विश्वास और भरोसा है।

मेरी समझ मेरे विचार

नीचे दिए गए प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा कीजिए और उनके उत्तर लिखिए—

1. "जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ" पंक्ति में रैदास की अपने आराध्य में अटूट निष्ठा का भाव है। इससे आप क्या समझते हैं? विस्तार से लिखिए।

उत्तर: इस पंक्ति का अर्थ है— "हे राम! यदि आप मुझसे नाता तोड़ भी दें, तो भी मैं आपसे अपना नाता नहीं तोड़ूँगा।"

- यह पंक्ति रैदास के अटूट विश्वास और एकनिष्ठ प्रेम को दर्शाती है।
- रैदास यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि उनका और ईश्वर का संबंध किसी सांसारिक स्वार्थ पर टिका हुआ नहीं है, बल्कि यह आत्मा का परमात्मा से गहरा जुड़ाव है।
- भक्त अपनी ओर से समर्पण की ऐसी पराकाष्ठा पर है जहाँ वह ईश्वर की मर्जी पर निर्भर नहीं है, बल्कि स्वयं को पूरी तरह ईश्वर के चरणों में सौंप चुका है। यह भाव दर्शाता है कि सच्ची भक्ति में कोई शर्त नहीं होती।

2. रैदास ने तीर्थ और व्रत के स्थान पर किस साधन को भक्ति का प्रमुख आधार माना है? आपके विचार से भक्ति के क्या आधार हो सकते हैं?

उत्तर: रैदास ने तीर्थ और व्रत (बाहरी कर्मकांड) के स्थान पर भगवान के चरणों में सच्ची भक्ति और विश्वास को प्रमुख आधार माना है।

- रैदास के अनुसार: रैदास ने बाह्य आडंबरों जैसे तीर्थ यात्रा और कठिन व्रतों के स्थान पर आंतरिक भक्ति और ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास को प्रमुख आधार माना है। उनके लिए ईश्वर कहीं बाहर नहीं बल्कि स्वयं के भीतर समाया हुआ है, जिसे केवल प्रेम और समर्पण से पाया जा सकता है।
- मेरे विचार से भक्ति के आधार हो सकते हैं:
  - मानवता की सेवा: दीन-दुखियों की मदद करना ही सच्ची ईश्वर सेवा है।
  - शुद्ध अंतःकरण: मन में छल-कपट न रखना और सभी प्राणियों के प्रति दया भाव रखना।
  - अहंकार का त्याग: स्वयं को ईश्वर का अंश मानकर घमंड से दूर रहना।
  - निरंतर स्मरण: ईश्वर को केवल संकट में नहीं, बल्कि जीवन के हर क्षण में याद रखना।

निष्कर्ष: भक्ति का असली आधार भीतर की भावना है, न कि बाहरी दिखावा।

3. दोनों पदों में भक्त और आराध्य के संबंध को किन-किन प्रतीकों/उपमाओं से व्यक्त किया गया है? लिखिए।

उत्तर: पदों में प्रयुक्त प्रतीकों और उपमाओं की सूची नीचे दी गई है:

आराध्य (भगवान)	भक्त (रैदास)	संबंध का प्रतीक/भाव
• चंदन	- पानी	- जैसे पानी में चंदन घिसने से उसकी सुगंध अंग-अंग में बस जाती है।
• घन (बादल)	- मोरा (मोर)	- जैसे काले बादलों को देखकर मोर खुशी से नाचने लगता है।
• चंद (चंद्रमा)	- चकोरा	- जैसे चकोर पक्षी एकटक चंद्रमा को निहारता रहता है।
• दीपक	- बाती	- जैसे बाती जलकर दीपक के प्रकाश को फैलाती है।
• मोती	- धागा	- जैसे धागा मोतियों को पिरोकर एक सुंदर माला बनाता है।
• सोना	- सुहागा	- जैसे सुहागा सोने की अशुद्धि दूर कर उसे चमका देता है।
• स्वामी	- दासा (सेवक)	- भक्त स्वयं को ईश्वर का समर्पित सेवक मानता है।

इन उपमाओं के माध्यम से रैदास ने यह सिद्ध किया है कि भक्त और भगवान एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं और उनका संबंध अत्यंत गहरा तथा अटूट है।

विधा से संवाद

कविता का सौंदर्य

- "प्रभु जी तुम घन बन, हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।"

  उपर्युक्त पंक्ति के रेखांकित अंश पर ध्यान दीजिए। इसमें अनुप्रास अलंकार का प्रयोग किया गया है। जिस रचना में व्यंजन वर्णों की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

- "प्रभु जी तुम मोती, हम धागा, जैसे सोने मिलत सुहागा।"

  उपर्युक्त रेखांकित अंश में उपमा अलंकार है। किसी प्रसिद्ध वस्तु की समानता के आधार पर जब किसी वस्तु या व्यक्ति के रूप, गुण, धर्म का वर्णन किया जाता है तो वहाँ उपमा अलंकार होता है।

- "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"

  उपर्युक्त रेखांकित अंश में रूपक अलंकार है। रूपक अलंकार वहाँ होता है जहाँ रूप और गुण की अत्यधिक समानता के कारण उपमेय में उपमान का आरोप कर अभेद स्थापित किया जाए।

अब आप अपनी पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित कविताओं में अनुप्रास, उपमा और रूपक अलंकार वाली अन्य पंक्तियों को ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: अलंकारों के अन्य उदाहरण

1. अनुप्रास अलंकार – परिभाषा: जहाँ एक ही व्यंजन वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
   - उदाहरण: "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।"
   - → तर्क: यहाँ 'च' वर्ण की आवृत्ति हुई है।
   - उदाहरण: "जाकी जोति बरै दिन राती।"
   - → तर्क: यहाँ 'ज' वर्ण की आवृत्ति के कारण अनुप्रास का सौंदर्य है।
2. उपमा अलंकार – परिभाषा: जहाँ किसी प्रसिद्ध वस्तु से समानता दिखाते हुए 'जैसे', 'ज्यों', 'समान' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है, वहाँ उपमा अलंकार होता है।
   - उदाहरण: "प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती।"
   - → तर्क: यहाँ भक्त और भगवान के अटूट संबंध की तुलना दीपक और बाती की अटूट जोड़ी से की गई है।
   - उदाहरण: "जैसे सोने मिलत सुहागा।"
   - → तर्क: यहाँ भक्त का ईश्वर में मिल जाना ठीक वैसा ही बताया गया है जैसे सोने में सुहागा मिलने से उसकी शुद्धता और चमक बढ़ जाती है।
3. रूपक अलंकार – परिभाषा: जहाँ उपमेय (जिसकी तुलना की जाए) और उपमान (जिससे तुलना की जाए) में कोई भेद न रहे और उन्हें एक ही मान लिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है।
   - उदाहरण: "अब कैसे छूटै राम रट लागी।"
   - → तर्क: यहाँ 'राम' के नाम और 'रट' (लगाव) को अभिन्न माना गया है।

- उदाहरण: "तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"

➔ तर्क: यहाँ ईश्वर के चरणों को ही कमल का रूप दे दिया गया है, अर्थात चरणों और कमल में कोई अंतर नहीं रखा गया है।

कविता की कुछ अन्य विशेषताएँ

नीचे दी गई सूची को ध्यान से देखिए। इस सूची में रैदास के दोनों पदों से कुछ विशेषताएँ चुनकर दी गई हैं। पदों में से चुनकर इन विशेषताओं को दर्शाती पंक्तियाँ लिखिए। उदाहरण के लिए पहली विशेषता के सामने पंक्ति दी गई है।

विशेषताएँ	उदाहरण
अनन्य भक्ति भाव सरल और लोकधर्मी भाषा उपमा और तुलना लयात्मकता और गेयता/ध्वन्यात्मकता दृढ़ निष्ठा और आस्था	"जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौ जोरो।"

उत्तर:

विशेषताएँ	उदाहरण (पंक्तियाँ)
• अनन्य भक्ति भाव	- "जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ, तुम सौ तोरि कवन सौं जोरौ।"
• सरल और लोकधर्मी भाषा	- "प्रभु जी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।"
• उपमा और तुलना	- "जैसे चितवत चंद चकोरा" / "जैसे सोने मिलत सुहागा।"
• लयात्मकता और गेयता	- "प्रभु जी तुम दीपक, हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।"
• दृढ़ निष्ठा और आस्था	- "तीरथ बरत न करूँ अंदेसा, तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां।"

विषयों से संवाद

1. तीर्थ और व्रत के स्थान पर रैदास ने आराध्य की भक्ति को प्रधान माना है। भक्तिकाल के कवि रैदास की तरह कबीर भी निराकार आराध्य की भक्ति पर बल देते हैं। तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर बताइए कि इसके क्या कारण हो सकते हैं? (संकेत- आप अपने सामाजिक विज्ञान के शिक्षक की सहायता भी ले सकते हैं।)

उत्तर: भक्तिकाल के दौरान संत रैदास और कबीर ने बाह्य आडंबरों (तीर्थ, व्रत, मूर्ति पूजा) के स्थान पर निराकार आराध्य की आंतरिक भक्ति पर बल दिया। तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के आधार पर इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे:

- जाति-पाति और छुआछूत का विरोध: उस समय का समाज ऊँच-नीच और जातिवाद की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था। कई वर्गों को मंदिरों में प्रवेश और धार्मिक अनुष्ठानों की अनुमति नहीं थी। निराकार भक्ति ने यह संदेश दिया कि ईश्वर किसी विशेष स्थान या कर्मकांड के अधीन नहीं है, वह सबके भीतर है।
- धार्मिक आडंबरों की जटिलता: तत्कालीन समय में धर्म कर्मकांडों और कठिन व्रतों में उलझ गया था, जिसे साधारण जनता के लिए निभाना कठिन था। संतों ने सरल और सहज प्रेम मार्ग (निराकार भक्ति) सुझाया जिसे कोई भी अपना सकता था।
- सामाजिक समरसता और एकता: निराकार ईश्वर की अवधारणा ने हिंदू-मुस्लिम और विभिन्न जातियों के बीच की दूरियों को कम करने का प्रयास किया। जब ईश्वर का कोई आकार नहीं है, तो उसे पूजने का अधिकार भी सबका समान है।
- अंतःकरण की शुद्धि पर बल: रैदास और कबीर का मानना था कि मन की पवित्रता ही सच्ची तीर्थ यात्रा है। उनके अनुसार, "मन चंगा तो कठौती में गंगा," अर्थात यदि मन शुद्ध है, तो घर बैठे ही ईश्वर की प्राप्ति संभव है।

2. "सोने मिलत सुहागा"

'सुहागा' एक प्राकृतिक खनिज है जिसके प्रयोग से सोने की अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं और उसकी चमक बढ़ जाती है। 'सुहागा' का रासायनिक नाम और उसकी विशेषताएँ अपने विज्ञान के शिक्षक से चर्चा करके लिखिए।

उत्तर: कविता में प्रयुक्त पंक्ति "जैसे सोने मिलत सुहागा" के संदर्भ में सुहागा का वैज्ञानिक विवरण इस प्रकार है:

- रासायनिक नाम: सोडियम टेट्राबोरेट डेकाहाइड्रेट ($Na_2B_4O_7 \cdot 10H_2O$) है।
- प्रकृति: यह एक प्राकृतिक खनिज (Mineral) है जो आमतौर पर झीलों के वाष्पीकरण से प्राप्त होता है।
- प्रमुख विशेषताएँ:
  - सोने की शुद्धि (Cleaning Agent): सुहागा एक बेहतरीन 'फ्लक्स' (Flux) के रूप में कार्य करता है। जब सोने को सुहागे के साथ गर्म किया जाता है, तो यह सोने में मौजूद तांबे और अन्य धातुओं की अशुद्धियों को सोख लेता है, जिससे सोना शुद्ध और अधिक चमकदार हो जाता है।
  - सफाई और कीटाणुशोधन: इसका उपयोग कपड़ों की सफाई (Laundry) और कीटाणुनाशक के रूप में भी किया जाता है।
  - कांच और सिरेमिक उद्योग: यह कांच को ऊष्मा-प्रतिरोधी (Heat-resistant) बनाने में मदद करता है।
  - लौ परीक्षण (Flame Test): विज्ञान की प्रयोगशाला में बोरेक्स मनका परीक्षण (Borax Bead Test) द्वारा विभिन्न धातुओं की पहचान की जाती है।

रैदास ने इसी वैज्ञानिक सत्य का उपयोग यह समझाने के लिए किया है कि जैसे सुहागा सोने के मूल्य और चमक को बढ़ा देता है, वैसे ही ईश्वर की भक्ति भक्त के व्यक्तित्व को निखार कर उसे पावन बना देती है।

भाषा से संवाद

व्याकरण की बात

शब्दों की बात

1. पठित पदों में से संज्ञा और सर्वनाम के तीन-तीन उदाहरण ढूँढ़कर लिखिए।

उत्तर: पठित पदों के आधार पर संज्ञा (Noun) और सर्वनाम (Pronoun) के तीन-तीन उदाहरण निम्नलिखित हैं:

- संज्ञा के उदाहरण:
  - चंदन: यह एक विशेष सुगंधित लकड़ी का नाम है।
  - पानी: यह एक द्रव्य का नाम है।
  - मोती: यह एक रत्न का नाम है।
- सर्वनाम के उदाहरण:
  - तुम: यह मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम है, जो ईश्वर (आराध्य) के लिए प्रयुक्त हुआ है।
  - हम: यह उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम है, जो भक्त (रैदास) के लिए प्रयुक्त हुआ है।
  - जाकी: यह संबंधवाचक सर्वनाम का रूप है (जिसकी)।

2. रैदास के इन दोनों पदों में बहुत से ऐसे शब्द प्रयुक्त हुए हैं जिनके स्थान पर अन्य शब्दों का प्रयोग होता है। नीचे सूची में दिए गए शब्दों को देखिए। आप या आपके आस-पास के लोग इन शब्दों के लिए किन अन्य शब्दों का प्रयोग करते हैं? लिखिए।

मोरा, चकोरा, बाती, राती, सोने, तीरथ, बरत

उत्तर: संत रविदास के पदों में प्रयुक्त शब्दों के स्थान पर प्रचलित शब्द इस प्रकार हैं—

दिए गए शब्द	प्रचलित/अन्य शब्द
• मोरा	- मोर
• चकोरा	- चकोर
• बाती	- बत्ती
• राती	- रात
• सोने	- सोना
• तीरथ	- तीर्थ
• बरत	- व्रत

सृजन

1. कक्षा में समूह बनाकर इन दोनों पदों को गाकर/पाठ करके प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर: यह एक क्रियात्मक गतिविधि है। विद्यार्थी रैदास के पदों को लय और ताल के साथ कक्षा में प्रस्तुत कर सकते हैं। इन पदों को शास्त्रीय संगीत के राग भैरवी या राग बिलावल में गाना बहुत प्रभावशाली होता है।

2. कल्पना कीजिए कि पद में आई उपमाओं के आधार पर भक्त और आराध्य आपस में बात कर रहे हैं। इस दृश्य को आधार बनाकर संवाद-लेखन कीजिए।

उत्तर: संवाद-लेखन (भक्त और आराध्य के बीच)

- भक्त (रैदास): हे प्रभु! मेरा और आपका नाता चंदन और पानी जैसा है। जैसे पानी चंदन के साथ मिलकर सुगंधित हो जाता है, वैसे ही आपके सान्निध्य से मेरा अंग-अंग महक उठा है।
- आराध्य (ईश्वर): प्रिय भक्त! यदि तुम पानी हो, तो मैं वह शीतल चंदन हूँ जो तुम्हारे भीतर समाया हुआ हूँ।
- भक्त (रैदास): प्रभु, आप आकाश के काले बादलों के समान हैं और मैं वन का मोर हूँ, जो आपको देखकर आनंद से नाचता हूँ। जैसे चकोर चाँद को निहारता है, वैसे ही मैं आपको देखता रहता हूँ।
- आराध्य (ईश्वर): और मैं वह चंद्रमा हूँ जो अपनी चाँदनी से तुम्हारे जीवन का अंधकार मिटाता हूँ।
- भक्त (रैदास): प्रभु! आप दीपक हैं और मैं आपकी बाती हूँ, जो दिन-रात आपकी भक्ति की ज्योति में जलकर प्रकाश फैलाना चाहता हूँ।
- आराध्य (ईश्वर): तुम्हारी यही अटूट श्रद्धा ही वह प्रकाश है जो संसार को सही मार्ग दिखाती है।

3. “जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ” पंक्ति को आधार बनाकर अटूट मित्रता पर एक लघुकथा तैयार कीजिए।

उत्तर: शीर्षक:

"अटूट नाता"

मोहन और सोहन बचपन के मित्र थे। मोहन एक धनी परिवार से था, जबकि सोहन बहुत गरीब था। एक बार मोहन के व्यवसाय में भारी घाटा हुआ और वह सड़क पर आ गया। मोहन को लगा कि अब उसकी गरीबी देखकर सोहन उससे दूरी बना लेगा। उसने सोहन से मिलना कम कर दिया।

एक दिन सोहन स्वयं मोहन के घर पहुँचा। मोहन ने दुखी होकर कहा, "मित्र, अब मेरा भाग्य बदल गया है, मेरे पास तुम्हें देने के लिए कुछ नहीं है। तुम चाहो तो मुझसे नाता तोड़ सकते हो।"

सोहन ने मुस्कुराते हुए उसका हाथ पकड़ा और कहा, “जो तुम तोरौ राम मैं नहिं तोरौ।” उसने आगे कहा, "मित्र, मित्रता कोई कागज़ का टुकड़ा नहीं जो फट जाए। यदि तुम मुझसे नाता तोड़ भी दोगे, तब भी मैं तुम्हारा साथ नहीं छोड़ूँगा। मेरी मित्रता तुम्हारे धन से नहीं, तुम्हारी आत्मा से है।"

सोहन ने अपनी सारी जमा-पूँजी मोहन के व्यवसाय में लगा दी और दोनों ने मिलकर फिर से सफलता प्राप्त की।

सीख: सच्ची मित्रता और ईश्वर की भक्ति, दोनों ही परिस्थितियों के बदलने से टूटते नहीं हैं।

झरोखे से

आपने रैदास के पद पढ़े। अब आप रैदास की तरह ही महाराष्ट्र के संत कवि नामदेव के आगे दिए गए दो पद पढ़िए। निर्गुण संत काव्य परंपरा के संत कवि नामदेव का जन्म 13वीं–14वीं शताब्दी में महाराष्ट्र में हुआ। अन्य संत कवियों की भाँति नामदेव ने भी बाह्य आडंबरों, सामाजिक रूढ़ियों का विरोध कर सामाजिक समरसता, प्रेम एवं निराकार भक्ति से संबंधित पदों की रचना की है।

(1)

माइ न होती बापु न होता करम न होती काया।

हम नहिं होते, तुम नहिं होते, कवन कहां ते आया।।

राम कोइ न किसही केरा। जैसे तरवर पंखि-बसेरा ।।

चंद न होता, सूर न होता, पानी पवनु मिलाया।

सास्त्र न होता बेद न होता, करमु कहां ते आया।।

खेचरि भूचरि तुलसी माला गुरपरसादी पाया।

नामा प्रणवै परम तत्त कूं सतगुर मोहि लखाया।।

(2)

मोहि लागति तालाबेली।

बछरा बिनु गाइ अकेली ।।

पानी बिनु ज्यूं मीन तलफैं।

ऐसे रामनाम बिनु नामा कलपै।।

जैसे गाइ का बाछा छूटला।

थन चोखता माखन घूटला ।।

नामदेउ नारायन पाया।

गुर भेटत ही अलख लखाया।।

जैसे विषै हेत परनारी।

ऐसे नामे प्रीति मुरारी।।

जैसे ताप ते निरमल घामा।

तैसे रामनाम बिनु बापुरो नामा।।

अब अपनी कक्षा में चर्चा कीजिए और बताइए कि रैदास तथा नामदेव के पदों में क्या-क्या अंतर है और क्या-क्या समानताएँ हैं?

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com

उत्तर: संत रैदास और संत नामदेव दोनों ही मध्यकालीन भारत के महान निर्गुण संत कवि थे। उनके पदों का तुलनात्मक अध्ययन करने पर हमें निम्नलिखित समानताएँ और अंतर दिखाई देते हैं:

रैदास और नामदेव के पदों में समानताएँ

- निर्गुण निराकार भक्ति: दोनों ही कवि ईश्वर के निराकार रूप के उपासक हैं। वे ईश्वर को किसी मूर्ति या मंदिर तक सीमित नहीं मानते।
- अनन्य प्रेम और समर्पण: दोनों कवियों में अपने आराध्य के प्रति गहरा प्रेम और समर्पण भाव झलकता है। जिस प्रकार रैदास 'चंदन-पानी' या 'चांद-चकोर' के उदाहरण देते हैं, नामदेव भी 'बछड़ा-गाय' और 'मछली-पानी' के माध्यम से ईश्वर के प्रति अपनी तड़प व्यक्त करते हैं।
- बाह्य आडंबरों का विरोध: दोनों संतों ने तीर्थ, व्रत, शास्त्र और बाहरी धार्मिक कर्मकांडों के स्थान पर मन की पवित्रता और सच्ची भक्ति पर बल दिया है।
- गुरु का महत्व: नामदेव और रैदास दोनों ने ही ज्ञान प्राप्ति और ईश्वर के दर्शन के लिए 'सतगुरु' के मार्गदर्शन को अनिवार्य माना है।
- सहज भाषा और प्रतीक: दोनों ने अपनी बात कहने के लिए लोक-जीवन से जुड़े प्रतीकों (जैसे- दीपक, सोना, पशु-पक्षी) का प्रयोग किया है ताकि सामान्य जनता उनकी बात समझ सके।

रैदास और नामदेव के पदों में अंतर

आधार	संत रैदास के पद	संत नामदेव के पद
• भाव की प्रकृति	- रैदास के पदों में *दास्य भाव* प्रधान है। वे स्वयं को ईश्वर का 'सेवक' या 'गुलाम' मानते हैं (जैसे— "ऐसी भक्ति करै रैदासा")।	- नामदेव के पदों में ईश्वर से बिछड़ने की *तड़प* और व्याकुलता अधिक तीव्रता से दिखाई देती है।
• दार्शनिक गहराई	- रैदास ईश्वर के साथ अपने अटूट संबंध और एकाकार होने पर बल देते हैं।	- नामदेव सृष्टि की उत्पत्ति और अस्तित्व पर प्रश्न उठाते हुए दार्शनिक तर्क प्रस्तुत करते हैं (जैसे— "माइ न होती बापु न होता...")।
• तुलना का आधार	- रैदास भक्त और भगवान की तुलना *द्रव्य और वस्तु* के मेल से करते हैं (जैसे— चंदन-पानी, सोना-सुहागा)।	- नामदेव प्राकृतिक और भावनात्मक संबंधों का उपयोग करते हैं (जैसे— गाय-बछड़ा, मछली-पानी, आदि)।
• भाषा का प्रभाव	- इनकी भाषा में अवधी, ब्रज तथा राजस्थानी का प्रभाव दिखाई देता है।	- नामदेव महाराष्ट्र के थे, इसलिए उनके पदों में मराठी और खड़ी बोली का प्रभाव अधिक स्पष्ट है।

खोजबीन

रैदास के जीवन और पदों के विषय में पुस्तकालय और इंटरनेट से खोजकर पढ़िए। कुछ लिंक नीचे दिए गए हैं।

https://youtu.be/zZoAghETdgI

https://youtu.be/0vfpBMozOXY

उत्तर: संत रविदास भक्ति काल के महान संत-कवि थे। उनका जन्म लगभग 15वीं शताब्दी में वाराणसी में हुआ था। वे समाज के निम्न वर्ग से थे, लेकिन अपने ज्ञान, भक्ति और मानवता के विचारों से उन्होंने समाज में ऊँचा स्थान प्राप्त किया।

- जीवन परिचय (संक्षेप में):
  - संत रविदास का जन्म एक साधारण परिवार में हुआ।
  - वे पेशे से मोची (चर्मकार) थे, लेकिन उनका मन भगवान की भक्ति में लगा रहता था।
  - उन्होंने जाति-पाँति और ऊँच-नीच का विरोध किया।
  - उनके गुरु संत रामानंद थे।
  - उनके विचारों से मीरा बाई भी बहुत प्रभावित थीं।
- पदों की विशेषताएँ:
  - उनके पदों में सरल भाषा और गहरी भावना होती है।
  - वे भगवान के प्रति सच्ची भक्ति और प्रेम का संदेश देते हैं।
  - उन्होंने बताया कि ईश्वर तक पहुँचने के लिए बाहरी आडंबर (तीर्थ, व्रत) आवश्यक नहीं हैं, बल्कि सच्चा मन और भक्ति जरूरी है।
  - उनके पदों में समानता, प्रेम और मानवता का संदेश मिलता है।
- मुख्य संदेश:
  - सभी मनुष्य समान हैं।
  - सच्ची भक्ति ही भगवान तक पहुँचने का मार्ग है।
  - हमें भेदभाव छोड़कर प्रेम और भाईचारे से रहना चाहिए।

निष्कर्ष: संत रविदास के जीवन और पद हमें सिखाते हैं कि सच्ची भक्ति, सरलता और समानता ही जीवन के सबसे बड़े मूल्य हैं।

Free worksheets, NCERT Solutions, Learning material & more at www.onepointlearning.com